

कमैजिह्वः ।

स्वाये । डि. एवात् तड् - कामयते ।

अधामन्ताड्डल्वाड्डध्याल्वाल्वा ।

आम् अन्त आलु आध्य इलु इल्लु एलु जेरमादेशः
स्वात् । कामपाञ्चके । आधाद्य इति जिह्वा ।
चकमे, चकमाते, चकमिरे । चकमिधे, चकमाधे,
चकमिध्वे । चकमे, चकमिध्वे, चकमिमहे । कामपिता,
कमिता । कामपितासे । कामपिल्लते, कमिल्लते ।
कामयताम् । अकामयत । कामयेत् । कामपिषीष्ट ।

आम् । अन्त, आलु, आध्य, इलु ओट
इल्लु प्रत्ययों के परे होने पर 'णि' के स्वात
पर 'अय्' आदेश होता है। यह सूत्र (जेशनिदि
से प्राप्त 'णि' लोप का वाचक है। उदाहरण
के लिए 'कामि' धातु से लिए तथा आम्
होकर कामि आम् लिट् रूप होने पर प्रकृत
सूत्र से जिह्वा इकार के स्वात पर 'अय्' होकर
काम् अय् आम् लिट् = 'कामयाम् लिट्'
रूप बनेगा। इस स्थिति में प्रथमपुरुष एकवचन
का विवरण में 'त' प्रत्यय आदि होकर
'कामपाञ्चके' रूप बनता है। इसके अतिरिक्त
'अन्त' प्रत्यय परे होने का उदाहरण
'गण्डयन्तः' में 'आलु' परे होने का (स्पृष्टप्रत्ययः)
में 'आध्य' परे होने का (स्पृष्टप्रत्ययः) में
'इलु' परे होने का (स्वभाविल्लुः) में तथा
'इल्लु' परे होने का उदाहरण (परायणल्लवः) में
मिलता है।

विभाषितः

इणः परौ य इह ततः परेषां धीध्वंलुङ्गलिटां
यस्य वा टः स्यात् । कामायिषीट् वम् । कामायिषी
कामायिषीध्वम् । कामिषीट् । कामिषीध्वम् ।

रि-त्रि-दु-सु-भः कर्त्तरि चङ् ।
शौरिनिदि ।

अनिडादावावधातुकं प्रै पीलपः स्यात्